विश्वास ही जहाँ परम्परा है।
तराई के सर्वोत्तम प्रमाणित बीज

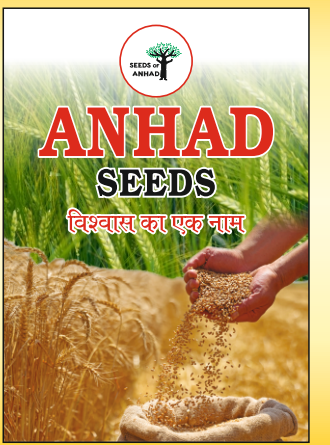

सिंचाई की कुल संख्या भूमि की किस्म एवं शीतकालीन वर्षा पर निर्भर है। चौथी सिंचाई उस दिन करनी चाहिए जब आसमान साफ हो। बलुई भूमि में ज्यादा सिंचाई करनी पड़ सकती है।

खरपतवार नियंत्रण :– बोआई के 48 घंटे के अन्दर आइसोप्रुट्रान का छिड़काव 400-500 मि.ली. को 200 लीटर पानी में मिलाकर कर दें। चौड़ी पत्ती खरपतवारों के लिए 5 कि.ग्रा. सक्रिय 2-4 डी. को 750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें। 2-4 डी. का छिड़काव बोने के 35 दिन बाद करें। जंगली जई के लिये एवाडेक्स 25 लीटर, 500-600 लीटर पानी में मिलाकर तथा गुल्ली डन्डा (फ्लेरिसमाईनर) के लिये TOKE-25 को 5 लीटर ट्रिक्निल 1.5 से 2 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से बोआई से एकदम पूर्व छिड़काव करें।

रोग नियन्त्रण :– कीट (रस्ट) रोग के लिये जिरम Z-78 या मेन्कोजेब M-45 की 2 किलोग्राम मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

कीट नियन्त्रण :– पत्ती खाने वाली कीड़े के लिये एन्डोसल्फान 1-1.25 लीटर, मैलाथियान

अनहद सीड्स ही क्यों प्रयोग करें

1. कृषि विश्वविद्यालयों के फार्मों से उत्पादित जनक एवं आधारीय बीजों द्वारा प्रमाणित बीजों का उत्पादन किया जाता है।
2. प्रशिक्षित एवं अनुभवी कृषि विशेषज्ञों की देख–रेख में खेत से लेकर पैकिंग तक बीजों की गुणवत्ता तथा शुद्धता की जाँच परख की जाती है।
3. बीजों का विधायन एवं उपचार आधुनिक मशीनों द्वारा किया जाता है।
4. उत्तराखण्ड प्रदेश सरकार द्वारा इन बीजों का परीक्षण व प्रमाणीकरण किया जाता है और

उत्पादक एवं विधायनकर्ताः

Produced, Packed & Marketed by:

ANHAD SEEDS

Village- Piplia, Bypass Road, Gadarpur, U.S. Nagar, U.K. -263152
Customer Care E-mail: anhadgroup@gmail.com

GERMINATION OF SEED TO BE CHECKED BEFORE SOWING

चेतावनी – बीज बोने से पहले जमाव जाँच लें। निर्धारित मानको के अतिक्रम पर केवल बीज मूल्य वापसी की प्रत्याभूति।

गेहूँ की अधिक उपजाऊ किस्मों का विवरण

क्र. सं.	प्रजाति	पकने की अवधि बोने के दिन से	उपयुक्त क्षेत्र	विशेष	पैदावार कुन्तल प्रति हेक्टेयर
1-	HD-2967	120-125	राजस्थान, हरियाणा, म0प्र0, उ0प्र0, बिहार, दिल्ली, बंगाल, उत्तराखण्ड आदि के लिये उपयुक्त है	यह प्रजाति सबसे बौनी व नयी प्रजाति है, दाना गठीला, मोटा व अधिक पैदावार वाली प्रजाति है।	55-60
2-	HD-2733	110-115	उ0प्र0, बिहार, बंगाल, आसाम, गुजरात, राजस्थान व म0प्र0 आदि के लिये उपयुक्त है।	यह प्रजाति खाने में बहुत स्वादिष्ट है इसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक है।	45-50
3-	UP-262	125-130	यह प्रजाति बिहार, पूर्वी उ0प्र0, बंगाल, झारखण्ड, व मैदानी भागों के लिये उपयुक्त है।	यह प्रजाति कम समय में अधिक पैदावार व खाने में स्वादिष्ट होता है। भूसे की मात्रा अधिक है।	45-50
4-	PBW-154	135-140	यह पंजाब, हरियाणा, समस्त उ0प्र0 बिहार व बंगाल के मैदानी भागों के लिये उपयुक्त है।	यह प्रजाति खाने में व पैदावार में बहुत उपयुक्त है। केबी के लिये अवरोधी है।	50-55
5-	PBW-226	100-115	यह पंजाब, हरियाणा, समस्त उ0प्र0, बिहार के मैदानी भागों के लिये उपयुक्त है।	कम समय में पैदा होने वाली व खाने में बहुत उपयुक्त है। भूसा अधिक, दाना गठीला व शरबती होता है।	45-50
6-	PBW-343	130-140	यह पंजाब, हरियाणा, समस्त उ0प्र0, बिहार झारखंड, बंगाल, आसाम आदि के लिये उपयुक्त है।	यह प्रजाति खाने व पैदावार के हिसाब से बहुत बेहतर है।	55-60
7-	PBW-373	120-125	उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, उत्तरांखण्ड, म0प्र0, झारखंड, आसाम आदि के लिये उपयुक्त है।	यह प्रजाति देरी से बुवाई में अधिक पैदावार देती है।	55-60
8-	UP-2425	120-130	पूर्वी उ0प्र0, बिहार, बंगाल, उत्तराखण्ड आदि इलाकों के लिये उपयुक्त है।	इसका दाना लम्बा व मोटा औसत पैदावार वाली प्रजाति है।	45-50
9-	PBW-502	130-135	दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उ0प्र0, बिहार, बंगाल, आसाम, म0प्र0, आदि के लिये उपयुक्त है।	भारत वर्ष की नई व अधिक पैदावार वाली बौनी प्रजाति है	55-60
10-	WH-711	120-125	राजस्थान, हरियाणा, म0प्र0, उ0प्र0, बिहार, दिल्ली, उत्तरांखण्ड बंगाल आदि के लिये उपयुक्त है	सबसे बौनी प्रजाति है, दाना गठीला, मोटा व अधिक पैदावार वाली प्रजाति है।	55-60
11-	DBW-303 (Karan Vaishnavi)	115-120	राजस्थान, हरियाणा, म0प्र0, उ0प्र0, बिहार, दिल्ली, उत्तरांखण्ड, बंगाल आदि के लिये उपयुक्त है	यह सबसे नयी प्रजाति है, दाना गठीला, मोटा व अधिक पैदावार वाली प्रजाति है।	55-60
12-	DBW-187 (Karan Vandana)	120-125	राजस्थान, हरियाणा, म0प्र0, उ0प्र0, बिहार, दिल्ली, उत्तरांखण्ड, बंगाल आदि के लिये उपयुक्त है	यह बौनी व नयी प्रजाति है, दाना गठीला, मोटा व अधिक पैदावार वाली प्रजाति है।	55-60

खेत की तैयारी :– गेहूँ सामान्य रूप से खरीफ फसलों जैसा मक्का, आलू, ज्वार, सोयाबीन, मटर आदि के बाद बोया जाता है। गेहूँ की खेती के लिये दोमट मिट्टी सर्वोत्तम होती है। पिछली फसल की कटाई के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई कर के बैल या ट्रैक्टर से दो तीन बार हैरों और घुमा देनी चाहिए,बोआई के समय खेत में खरपतवार नहीं होनी चाहिए। भूमि में नमी पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए तथा मिट्टी इतनी भुरभरी होनी चाहिए कि बीज तथा उर्वरक आसानी से उचित गहराई तक पहुँच जावें, बीजों के अच्छे अंकुरण के लिये बोने से पहले ही एक सिंचाई (पलेवा) कर देना चाहिए। गेहूँ के छोटे पौधे को दीमक व मिट्टी के अन्य कीड़ों से बचाने के लिए भूमि में बोआई से पहले एल्ड्रिन 5 प्रतिशत या बी.एच.सी. 10 प्रतिशत को 25 किलो की दर से मिट्टी में मिला दें।

उर्वरक :– यदि सम्भव हो तो मिट्टी की जाँच के आधार पर ही उर्वरक को मिट्टी में मिलायें। सिंचित व समय से बोई फसल में नाईट्रोजन 80 से 120 किलोग्राम, फास्फोरस 40 से 50 किलोग्राम तथा पोटाश 40 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से मिलायें। सिंचित तथा देर से बोई फसल में नाइट्रोजन, फास्फोरस की मात्रा को कुछ कम कर दें। फिर सीड ड्रिल यन्त्र द्वारा आधा नाइट्रोजन पूरा फास्फोरस व पोटाश बोआई के साथ ही भूमि में डाल देना चाहिए।

बोने का समय :– जल्दी पकने वाली फसल को नवम्बर के पहले पखवाड़े से, मध्यम पकने वाली किस्मों को नवम्बर के द्वितीय पखवाड़े से दिसम्बर के शुरू तक तथा देर से पकने वाली किस्मों को दिसम्बर के अन्त तक बो सकते हैं। गेहँ की बोआई का समय वातावरण के तापमान पर भी निर्भर करता है। गेहूँ के उचित जमाव के लिये 20°C से अधिक 12°C से कम नहीं होना चाहिए।

बीज की मात्रा :– साधारणतया प्रति हेक्टेयर 100 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। इससे अधिक मात्रा में बीज डालने पर भी उपज में कोई वृद्धि नहीं होती है। परन्तु दिसम्बर के अन्त में बोते समय बीज की मात्रा बढ़ाकर 125 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर कर देना चाहिए। यदि बीज पूर्व में उपचारित न हो तो उसे 2 ग्राम थाइरम प्रति कि.ग्रा. की दर से उपचारित कर देना चाहिए (नोट : अनहद सीड्स के बीज पूर्णतया उपचारित होते है।)

बीज की बोआई :– गेहूँ की बोआई में पंक्ति की दूरी 20-25 से.मी बीज की गहराई 5 से.मी. तक रहनी चाहिए। बोआई के समय भूमि में नमी की उचित मात्रा होने से अंकुरण समान रूप से होता है।

सिंचाई :– पहली सिंचाई मुख्य जड़ आरम्भ होने के समय 10 दिन के अन्दर, दूसरी सिंचाई कल्ले फूटने के समय बुआई से 40-45 दिन बाद, तीसरी सिंचाई गांठे पड़ने पर 70-75 दिन बाद, चौथी सिंचाई फूल